Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

सौन्दर्य लहरी में प्रयुक्त कृदन्त क्रिया पदों का विवेचन

Dr. Sunita Kumari*

Assistant Professor, Department of Sanskrit Government College, Nangal Chaudhary, Haryana

सार – संस्कृत भाषा के क्रियापदों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है तिङन्त क्रियापद एवं कृदन्त क्रियापद। ये दोनों प्रकार के क्रियापद दो सार्थक इकाईयों से बनते हैं। संज्ञावादी या विशेषण आदि बनाने के लिए धातु से जो प्रत्यय किए जाते हैं उन्हें कृत् कहते हैं। आचार्य पणिनि ने धातुओं से होने वाले 'तिप तस झि' आदि 'तिङ्' भिन्न प्रत्ययों को कृत् संज्ञा दी है– 'कृदतिङ्'। इस प्रकार कृदन्त वे शब्द हैं जो 'तिङ्' भिन्न प्रत्ययों को धातुओं से जोड़कर बनाए जाते हैं।

----------X----------

कृदन्त क्रियापद विशेषण एवं संज्ञा दोनों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। कृदन्त क्रियापद वर्तमान, भूत व भविष्य आदि के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। जिन्हें इस प्रकार विभाजित किया जा सकता हैः–

1. वर्तमान काल में प्रयोग होने वाले कृदन्त प्रत्यय।
2. भूत कालिक प्रत्यय।
3. भविष्यत् कालिक प्रत्यय।
4. पूर्वकाल को द्योतित करने वाले प्रत्यय।
5. क्रियार्थक कृदन्त वाले प्रत्यय।

1. वर्तमान काल में प्रयोग होने वाले कृदन्त प्रत्यय

वर्तमान काल को प्रकट करने के लिए शतृ व शानच् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। 'शतृ व शानच् की सत् संज्ञा होती है।[58] जैसे भू से शतृ प्रत्यय करने से भवत् रूप बनता है जिसका अर्थ है होता हुआ इसी प्रकार शीङ् धातु से शानच् करने पर 'शयान' (सोता हुआ) कृदन्त रूप बनता है।

2. भूतकालिक प्रत्यय

भूतकालिक प्रत्ययों के रूप में क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों का प्रयोग होता है। पाणिनि के अनुसार भूतकाल द्योतन के लिए निष्ठा संज्ञा की जाए तथा निष्ठा संज्ञा क्त व क्तवतु की होती है।[59] गम् धातु से क्त प्रत्यय से 'गतः' व क्तवतु से 'गतवान्' रुप बनता है।

3. भविष्यत् कालिक

प्रत्यय तो वही शतृ का अत् व शानच् का आन या मान होते हैं। किन्तु इनमें स्य पहले जुड़ जाता है। इन्हीं प्रत्ययों के साथ कुछ विध्यर्थक प्रत्ययों का भी विधान किया गया है जिनमें यत्, तव्यत्, अनीयर, ण्यत् आदि प्रत्यय आते है जैसे दा धातु से शतृ व शानच् लगाने से दास्यत् व दास्यमान रूप बनते हैं। इसी प्रकार दा धातु से तव्य व अनीय लगाने से दातव्य व दानीय रूप बनते हैं।

4. पूर्वकाल को द्योतित करने वाले प्रत्यय

पूर्वकाल को द्योतित करने वाले प्रत्यय क्त्वा और ल्यप् हैं। जब वाक्य में कहा जाए कि यह कार्य करके यह कार्य किया तो धातु से क्त्वा प्रत्यय का विधान किया जाता है। धातु यदि उपसर्ग सहित प्रयोग की जाती है तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् हो जाता है जैसे निरु. कृ धातु से क्त्वा करके कृत्वा क्रियापद बनता है तथा अनु उपसर्ग धातु से पूर्व लगने पर अनुकृत्य रूप बनता है।

5. क्रियार्थक कृदन्त वाले प्रतयय

क्रियार्थक क्रिया को बताने के लिए धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय का विधान किया गया इसमें अन्य प्रत्ययों के समान लिङ् वचन आदि का प्रभाव नहीं पड़ता।

सौन्दर्य लहरी में आए हुए कृदन्त क्रियापदों का विवेचन अकारादि क्रम से किया गया है। धातु को अनुबन्ध सहित लिया गया है। प्रत्येक धातु के अर्थ, गण पद, सेट, अनिट् सोप., निरु. का विवरण प्रत्येक क्रियापद में दिया गया है। इसके लिए भट्टोजीदीक्षित कृत "वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी" जिसके व्याख्याकार पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदः हैं को आधार माना है। सौन्दर्य लहरी में सबसे अधिक प्रयोग ल्यप् व क्त प्रत्यय का हुआ है। सौन्दर्य लहरी में प्रयुक्त कृदन्त क्रियापदों का विवेचन उपर्युक्त क्रम से प्रस्तुत हैः–

अवाप्य[60]→ सोप. √आप्लृ व्याप्तौ[61] स्वा. प. अ.

अव. √आप्लृ. क्त्वा को ल्यप् करने पर

अति संधाय[62] → सोपत्र √डुधाञ् धारणपोषणयोः[63] जु. उ. अ.

[58]. वै० सि० कौ० "तौसत्" (3106)
[59]. वै० सि० कौ० "निष्ठा" (3013)
[60]. सौ० ल० 3/10
[61]. वै० सि० कौ० आप्लृ[1280]
[62]. सौ० ल० 1/31
[63]. वै० सि० कौ० डुधाञ्[1092]

www.ignited.in

अति. सम्. √डुधाञ्. क्त्वा को ल्यप् करने पर

अमुञ्चन्तौ[64]→ नञ् उप. √मुच्लृ मोक्षणे[65] तृ. उ. अ.

नञ्. √मुच्लृ. शतृ प्रत्यय

अधिष्ठाय[66] → सोप. √ष्ठा गतिनिवृत्तौ[67] भ्वा. प. अ.

अधि. √ष्ठा. क्त्वा को ल्यप् करने पर

अपीतम्[68]→ नञ् उप0 √पा पाने[69] भ्वा. प. अ.

नञ्. √पा. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आराध्य[70]→ सोप. √राध संसिद्धौ[71] स्वा. प. अ.

आङ् पू. राध क्त्वा को ल्यप् करने पर

आलम्ब्य[72] → सोप. √लबि अवस्रंसने शब्दे च भ्वा. आ. अ.

आङ् पू. √लबि क्त्वा को ल्यप् करने पर[73]

आस्वाद्य[74]→ सोप. √स्वाद आस्वादने[75] भ्वा. आ. से.

आङ्. √स्वाद. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आकृष्ट[76]→ सोप. √कृष विलेखने[77] भ्वा. प. अ.

आङ्. √कृष. क्त प्रत्यय

आरूह्य[78]→ सोप. √रूह बीज जन्मनि प्रादुर्भावे[79] भ्वा. प. अ.

आङ्. √रूह. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आलोक्य[80]→ सोप. √लोकृ दर्शने[81] भ्वा. आ. से.

आङ्. √लोकृ. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आच्छिद्य[82]→ सोप. √छिदिर् द्वैधीकरणे[83] रू. उ. अ.

आङ्. √छिदिर. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आदाय[84]→ सोप. √डुदाञ् दाने[85] जु. उ. अ.

आङ्. √दाञ्. क्त्वा को ल्यप् करने पर

आरब्धुम्[86]→ सोप. √रभ राभस्ये शीघ्री भावः[87] भ्वा. आ. अ.

आङ्. √रभ. तुमुन् प्रत्यय

अपहृत[88]→ सोप. √हृञ् हरणे[89] भ्वा. उ. अ.

अप. √हृञ्. क्त प्रत्यय

उद्दिश्य[90] → सोप. √दिश अतिसर्जने[91] तु. उ. अ.

उद्. √दिश. क्त्वा को ल्यप् करने पर।

उक्ताः[92]→ निरु. √वच परिभाषणे[93] अ. प. अ.

√वच. क्त प्रत्यय

उदभूत्[94]→ सोप. √भू सत्तायाम्[95] भ्वा. प. से.

उद्. √भू. क्त प्रत्यय

कृत्वा[96]→ निरु. √डुकृञ् करणे[97] तु. प. से.

√डुकृञ्. क्त्वा प्रत्यय

कर्त्ता[98]→ निरुण √डुकृञ् करणे[99] तु. प. से.

√डुकृञ्. तृच् प्रत्यय

कृतम्[100]→ निरुण √डुकृञ् करणे[101] तु. प. से.

√डुकृञ्. क्त प्रत्यय

64. सौ0 ल0 3/50
65. वै0 सि0 कौ0 मुच्लृ[1430]
66. सौ0 ल0 1/39
67. वै0 सि0 कौ0 ष्ठा[928]
68. सौ0 ल0 1/72
69. वै0 सि0 कौ0 पा[925]
70. सौ0 ल0 1/5
71. वै0 सि0 कौ0 राध[1262]
72. सौ0 ल0 4/24
73. वै0 सि0 कौ0 लबि[377]
74. सौ0 ल0 1/28
75. वै0 सि0 कौ0 स्वाद[28]
76. सौ0 ल0 4/52
77. वै0 सि0 कौ0 कृष[990]
78. सौ0 ल0 3/59
79. वै0 सि0 कौ0 रुह्[859]
80. सौ0 ल0 2/72
81. वै0 सि0 कौ0 लाकृ[76]
82. सौ0 ल0 2/81
83. वै0 सि0 कौ0 छिदिर्[1440]
84. सौ0 ल0 4/88
85. वै0 सि0 कौ0 डुदाञ्[1091]
86. सौ0 ल0 1/91
87. वै0 सि0 कौ0 रभ[974]
88. सौ0 ल0 2/65
89. वै0 सि0 कौ0 हृञ्[899]
90. सौ0 ल0 3/41
91. वै0 सि0 कौ0 दिश[1283]
92. सौ0 ल0 3/61
93. वै0 सि0 कौ0 वच[1036]
94. सौ0 ल0 1/99
95. वै0 सि0 कौ0 भू[1]
96. सौ0 ल0 4/10, 1/86
97. वै0 सि0 कौ0 डु0ञ्[1472]
98. सौ0 ल0 3/17
99. वै0 सि0 कौ0 डु0ञ्[1472]
100. सौ0 ल0 3/86
101. वै0 सि0 कौ0 डु0ञ्[1472]

www.ignited.in

गताः[102]→ निरु. √गम्लृ गतौ[103] भ्वा. प. अ.

√गम्लृ. क्त प्रत्यय

गायन्ती[104]→ निरु0 √गै शब्दे[105] भ्वा. प. अ.

√गै. शतृ प्रत्यय

घटिताः[106]→ √घट चेष्टायाम्[107] भ्वा. आ. से.

√घट. क्त प्रत्यय

चरन्तः[108]→ निरु0 √चर गतौ[109] भ्वा. प. से.

√चर. शतृ प्रत्यय

जातम्[110]→ निरु0 √जनी प्रादुर्भावे[111] भ्वा. आ. से.

√जनी. क्त प्रत्यय

जित्वा[112]→ निरु. √जि जये[113] भ्वा. प. अ.

√जि. क्त्वा प्रत्यय

जीवन्[114]→ निरु. √जीव प्राणधारणे[115] भ्वा. प. स.

√जीव. शतृ प्रत्यय ।

त्रातुम्[116]→ निरु. √त्रैङ पालने[117] भ्वा. आ. अ.

√त्रैङ्. तुमुन् प्रत्यय

तुलयितुम्[118]→ निरु. √तुल् उन्माने[119] चु. उ. से.

√तुल्. णिच्. तुमुन् प्रत्यय

दातुम्[120]→ निरु. √डुदाञ् दाने[121] जु. उ. अ.

डुदाञ्. तुमुन् प्रत्यय

दृष्ट्वा[122]→ निरु. √दृशिर् प्रेक्षणे[123] भ्वा. प. अ.

√दृशिर्. क्त्वा प्रत्यय

दधती[124]→ निरु. √दध धारणे[125] भ्वा. आ. से.

√दध. शतृ प्रत्यय

धाता[126]→ निरु. √डुधाञ्[127] जु. उ. अ.

√डुधाञ्. तृच् प्रत्यय

ध्वान्तम्[128]→ निरु. √ध्वन[129] भ्वा. प. स.

√ध्वन. क्त प्रत्यय

धृतम्[130]→ निरु. √धृञ् धारणे[131] भ्वा. उ. अ.

√धृञ्. क्त प्रत्यय

संदर्भ

1. अपरोक्षानुभूति शंकराचार्य के संदर्भ में सम्पा. डॉ. जानकी देवी नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, नई दिल्ली प्रकाशन 2015

2. आदि शंकराचार्य जीवन और दर्शन सम्पा0 जयराम मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, 15–। महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद प्र0 स0 2016

3. आदि शंकराचार्य की भाष्य पद्धति सम्पा0 डा0 लेखराम शर्मा, इन्दु प्रकाशन, 29/5 शक्ति नगर, नई दिल्ली 110007

4. मध्य सिद्धान्त कोमुदी सम्पा0 श्री विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर, मोती लाल बनारसी दास बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007 संस्करण 2014

[102]. सौ0 ल0 1/66
[103]. वै0 सि0 कौ0 गै[917]
[104]. सौ0 ल0 3/61
[105]. वै0 सि0 कौ0 घट[763]
[106]. सौ0 ल0 1/80
[107]. वै0 सि0 कौ0 चर[559]
[108]. सौ0 ल0 2/91
[109]. वै0 सि0 कौ0 जनी[1149]
[110]. सौ0 ल0 1/65
[111]. वै0 सि0 कौ0 जि[511]
[112]. सौ0 ल0 3/17
[113]. वै0 सि0 कौ0 जीव[562]
[114]. सौ0 ल0 3/101
[115]. वै0 सि0 कौ0 जीव[562]
[116]. सौ0 ल0 4/93, 3/80
[117]. वै0 सि0 कौ0 त्रैङ्[965]
[118]. सौ0 ल0 1/12
[119]. वै0 सि0 कौ0 तुल्[1599]
[120]. सौ0 ल0 3/4
[121]. वै0 सि0 कौ0 डुदाञ्[1091]
[122]. सौ0 ल0 3/50
[123]. वै0 सि0 कौ0 दृशिर्[1091]
[124]. सौ0 ल0 1/52
[125]. वै0 सि0 कौ0 दध[8]
[126]. सौ0 ल0 1/24
[127]. वै0 सि0 कौ0 डुधाञ्[1092]
[128]. सौ0 ल0 1/43
[129]. वै0 सि0 कौ0 ध्वन्[828]
[130]. सौ0 ल0 2/47
[131]. वै0 सि0 कौ0 धृञ्[900]

5. लघु सिद्धान्त कौमुदी सम्पा0 प0 श्री हरेकान्त मिश्र भारतीय विद्या प्रकाशन जवाहर नगर बंग्लो रोड दिल्ली 110007 संस्करण 2014

Corresponding Author

Dr. Sunita Kumari*

Assistant Professor, Department of Sanskrit Government College, Nangal Chaudhary, Haryana

E-Mail – skjhooda@gmail.com